

අලු බකර් තුමාගේ පාලන සමයේදී අල්-කුර්ආනය ගොනු කිරීම සහ උසමාන් තුමාගේ පාලන සමයේදී එය පුළුස්සා දැමීමේ කතාව කුමක්ද?

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कुरआन को अपने विभिन्न साथियों के हाथ में विश्वस्त एवं संकलित रूप में छोड़ा, ताकि उसे पढ़ा और दूसरों को पढ़ाया जा सके। फिर जब अबू बक्र -रज़ियल्लाहु अन्हु- खलीफ़ा बने, तो उन्होंने इन बिखरे हुए सहीफ़ों को एक स्थान में जमा करने का आदेश दिया, ताकि उसको स्रोत (الْمَوْजُودُ) के रूप में प्रयोग किया जा सके। फिर जब उसमान -रज़ियल्लाहु अन्हु- का समय आया, तो उन्होंने विभिन्न शहरों में सहाबा के हाथों में विभिन्न शैलियों में मौजूद कुरआन की कॉपियों एवं सहीफ़ों को जलाने का आदेश दिया और उनके पास नई कॉपी, जो रसूल -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- की छोड़ी हुई एवं अबू बक्र के द्वारा जमा की हुई असली कॉपी के अनुरूप थी, उसको भेज दिया। ताकि इस बात की गारंटी रहे कि सभी शहर रसूल -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- के द्वारा छोड़ी गई एक मात्र असली कॉपी को स्रोत के रूप में इसतेमाल कर रहे हैं।

कुरआन बिना किसी बदलाव या परिवर्तन के वैसे ही बना रहा। वह हर ज़माना में हमेशा मुसलमानों के साथ रहा। वे उसको आपस में आदान-प्रदान करते रहे और नमाज़ों में पढ़ते रहे।

ලස්මාගේ පිළිබඳ ජරණ හා පිළිතුරු

පිටුව: [000000://000.00000.000/00-00000/00/52/](#)

පිටුව: [000000 000000: 000000://000.000000.000/00-00000/00/52/](#)

000000 300 00 000 2026 09:49:41 00